

## याकूब

**1** याकूब का, जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास है, संतों के बारहों कुलों को नमस्कार पहुँचे जो समूचे संसार में फैले हुए हैं।

### विश्वास और विवेक

2हे मेरे भाइयों, जब कभी तुम तरह तरह की परीक्षाओं में पड़ो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। 3क्योंकि तुम यह जानते हो कि तुम्हारा विश्वास जब परीक्षा में सफल होता है तो उससे धैर्यपूर्ण सहन शक्ति उत्पन्न होती है। 4और वह धैर्यपूर्ण सहन शक्ति एक ऐसी पूर्णता को जन्म देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो जिनमें कोई कमी नहीं रह जाती है। 5सो यदि तुममें से किसी में विवेक की कमी है तो वह उसे परमेश्वर से माँग सकता है। वह सभी को प्रसन्नता पूर्वक उदारता के साथ देता है। 6बस विश्वास के साथ माँग जाये। थोड़ा सा भी संदेह नहीं होना चाहिये। क्योंकि जिसको संदेह होता है, वह सागर की उस लहर के समान है जो हवा से उठती है और धरधरती है। 7ऐसे मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिये कि उसे प्रभु से कुछ भी मिल पायेगा। 8ऐसे मनुष्य का मन तो दुविधा से ग्रस्त है। वह अपने सभी कर्मों में अस्थिर रहता है।

### सच्चा धन

9साधारण परिस्थितियों वाले भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया है। 10और धनी भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे नम्रता दी है। क्योंकि उसे तो घास पर खिलने वाले फूल के समान झड़ जाना है। 11सूरज कड़कड़ाती धूप लिये उगता है और पौधों को सुखा डालता है। उनकी फूल पत्तियाँ झड़ जाती हैं और सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार धनी व्यक्ति भी अपनी भाग दौड़ के साथ समाप्त हो जाता है।

### परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

12वह व्यक्ति धन्य है जो परीक्षा में अटल रहता है क्योंकि परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन के उस विजय मुकुट को धारण करेगा, जिसे परमेश्वर ने

अपने प्रेम करने वालों को देने का वचन दिया है। 13परीक्षा की घड़ी में किसी को यह नहीं कहना चाहिये कि "परमेश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है।" क्योंकि बुरी बातों से परमेश्वर को कोई लेना देना नहीं है। वह किसी की परीक्षा नहीं लेता। 14हर कोई अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस कर परीक्षा में पड़ता है। 15फिर जब वह इच्छा गर्भवती होती है तो पाप पूरा बढ़ जाता है और वह मृत्यु को जन्म देता है।

16सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ। 17प्रत्येक उत्तम दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म दिया है, नीचे लाये जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से उत्पन्न छाया से कभी बदलता नहीं है। 18सत्य के सुसंदेश के द्वारा अपनी संतान बनाने के लिये उसने हमें चुना। ताकि हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल सिद्ध हों।

### सुनना और उस पर चलना

19हे मेरे प्रिय भाइयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता के साथ सुनना चाहिये, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध करने में उतावली मत बरतो। 20क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर की धार्मिकता नहीं उपजती। 21हर धिनौने आचरण और चारों ओर फैली दुष्टता से दूर रहो। तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गये परमेश्वर के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को उद्धार दिला सकता है। 22परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनो, न कि केवल उसे सुनने वाले। यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो तो तुम अपने आपको छल रहे हो। 23क्योंकि यदि कोई परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। 24वह स्वयं को अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। 25किन्तु जो परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और उसी पर आचरण भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिये धन्य होगा।

### भक्ति का सच्चा मार्ग

26यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी जीभ पर कस कर लगाम नहीं लगता तो वह धोखे में है। उसकी भक्ति निरर्थक है। 27परम पिता परमेश्वर के सामने सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों और विधवाओं की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाये और स्वयं को कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया जाये।

### सबसे प्रेम करो

2 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में जो तुम्हारा विश्वास है, वह पक्षपातपूर्ण न हो। 2कल्पना करो तुम्हारी सभा में कोई व्यक्ति सोने की अँगूठी और भव्य वस्त्र धारण किये हुए आता है। और तभी मैले कुचैले कपड़े पहने एक निर्धन व्यक्ति भी आता है। 3और तुम जिसने भव्य वस्त्र धारण किये हैं, उसको विशेष महत्त्व देते हुए कहते हो, "यहाँ इस उत्तम स्थान पर बैठो", जबकि उस निर्धन व्यक्ति से कहते हो, "वहाँ खड़ा रह" या "मेरे पैरों के पास बैठ जा।" 4ऐसा करते हुए क्या तुमने अपने बीच कोई भेद-भाव नहीं किया और बुरे विचारों के साथ न्यायकर्ता नहीं बन गये?

5हे मेरे प्यारे भाइयो, सुनो क्या परमेश्वर ने संसार की आँखों में उन निर्धनों को विश्वास में धनी और उस राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना, जिसका उसने, जो उसे प्रेम करते हैं, देने का वचन दिया है। 6किन्तु तुमने तो उस निर्धन व्यक्ति के प्रति घृणा दर्शायी है। क्या ये धनिक व्यक्ति वे ही नहीं हैं, जो तुम्हारा शोषण करते हैं और तुम्हें कचहरियों में घसीट ले जाते हैं? 7क्या ये वे ही नहीं हैं, जो मसीह के उस उत्तम नाम की निन्दा करते हैं, जो तुम्हें दिया गया है?

8यदि तुम शास्त्र में प्राप्त होने वाली इस उच्चतम व्यवस्था का सचमुच पालन करते हो, "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो" \* तो तुम अच्छा ही करते हो। 9किन्तु यदि तुम पक्षपात दिखाते हो तो तुम पाप कर रहे हो। फिर तुम्हें व्यवस्था के विधान को तोड़ने वाला ठहराया जायेगा। 10क्योंकि कोई भी यदि समग्र व्यवस्था का पालन करता है और एक बात में चूक जाता है तो वह सम्पूर्ण व्यवस्था के उल्लंघन का दोषी हो जाता है। 11क्योंकि जिसने यह कहा था, "व्यभिचार मत करो" \* उसी ने यह भी कहा था, "हत्या मत करो" \* सो यदि तुम व्यभिचार नहीं करते किन्तु हत्या करते हो तो तुम व्यवस्था को तोड़ने

"अपने ... हो" लैव्य. 19:18

"व्यभिचार मत करो" निर्गमन 20:14; व्यवस्था. 5:18

"हत्या मत करो" निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

वाले हो। 12तुम उन्हीं लोगों के समान बोलो और उनही के जैसा आचरण करो जिनका उस व्यवस्था के अनुसार न्याय होने जा रहा है, जिससे छुटकारा मिलता है। 13जो दयालु नहीं है, उसके लिये परमेश्वर का न्याय भी बिना दया के ही होगा। किन्तु दया न्याय पर विजयी है।

### विश्वास और सत् कर्म

14हे मेरे भाइयो, यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह विश्वासी है तो इसका क्या लाभ जब तक कि उसके कर्म विश्वास के अनुकूल न हों? ऐसा विश्वास क्या उसका उद्धार कर सकता है? 15यदि भाइयों और बहनों को वस्त्रों की आवश्यकता हो, उनके पास खाने तक को न हो 16और तुममें से ही कोई उनसे कहे "शांति से जाओ, परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे, अपने को गरमाओ तथा अच्छी प्रकार भोजन करो" और तुम उनकी देह की आवश्यकताओं की वस्तुएँ उन्हें न दो तो फिर इसका क्या मूल्य है? 17इसी प्रकार यदि विश्वास के साथ कर्म नहीं है तो वह अपने आप में निष्प्राण है।

18किन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास है, जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा।" 19क्या तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर केवल एक है? अद्भुत! दुष्टात्माएँ यह विश्वास करती हैं कि परमेश्वर है और वे काँपती रहती हैं।

20अरे मूर्ख! क्या तुझे प्रमाण चाहिये कि कर्म रहित विश्वास व्यर्थ है? 21क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने कर्मों के आधार पर ही उस समय धर्मी नहीं ठहराया गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर अर्पित कर दिया था? 22तु देख कि उसका वह विश्वास उसके कर्मों के साथ ही सक्रिय हो रहा था। और उसके कर्मों से ही उसका विश्वास परिपूर्ण किया गया था। 23इस प्रकार शास्त्र का यह कहा पूरा हुआ था, "इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और विश्वास के आधार पर ही वह धर्मी ठहरा" \* और इसी से वह "परमेश्वर का मित्र" \* कहलाया। 24तुम देखो कि केवल विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से ही व्यक्ति धर्मी ठहरता है।

25इसी प्रकार राहब वेश्या भी क्या उस समय अपने कर्मों से धर्मी नहीं ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को अपने घर में शरण दी और फिर उन्हें दूसरे मार्ग से कहीं भेज दिया।

26इस प्रकार जैसे बिना आत्मा का देह मरा हुआ है, वैसे ही कर्म विहीन विश्वास भी निर्जीव है!

"इब्राहीम ... ठहरा" उत्पत्ति 15:6

"परमेश्वर ... मित्र" 2 इति. 20:7; यशा. 41:8

### वाणी का संयम

3 हे मेरे भाइयों, तुममें से बहुत से को शिक्षक बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिये। तुम जानते ही हो कि हम उपदेशक का और अधिक कड़ाई के साथ न्याय किया जायेगा। 2 मैं तुम्हें ऐसे इसलिये चेता रहा हूँ कि हम सबसे बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई बोलने में कोई भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है तो फिर ऐसा कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा सकता है? 3 हम घोड़ों के मुँह में इसलिये लगाम लगाते हैं कि वे हमारे बस में रहें। और इस प्रकार उनके समूचे देह को हम वश में कर सकते हैं। 4 अथवा जलयानों का उदाहरण भी लिया जा सकता है। देखो, चाहे वे कितने ही बड़े होते हैं और शक्तिशाली हवाओं द्वारा चलाये जाते हैं, किन्तु एक छोटी सी पतवार से उनका नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना चाहता है, उन पर काबू पाकर उन्हें ले जाता है। 5 इसी प्रकार जीभ, जो देह का एक छोटा सा अंग है, बड़ी बड़ी बातें कर डालने की डींग मारती है।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल को जला सकती है। 6 वहाँ, जीभ: एक लपट है। यह बुराई का एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह जीभ नरक की आग से धक्कती रहती है। 7 देखो, हर प्रकार के हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी में रहने वाले प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किये जा सकते हैं और किये भी गए हैं। 8 किन्तु जीभ को कोई मनुष्य वश में नहीं कर सकता। यह घातक विष से भरी एक ऐसी बुराई है जो कभी चैन से नहीं रहती। 9 हम इसी से अपने प्रभु और परमेश्वर की स्तुति करते हैं और इसी से लोगों को जो परमेश्वर की समरूपता में उत्पन्न किये गये हैं, कोसते भी हैं। 10 एक ही मुँह से आशीर्वाद और अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयों, ऐसा तो नहीं होना चाहिये। 11 सोते के एक ही मुहाने से भला क्या मीठा और खारा दोनों तरह का जल निकल सकता है। 12 मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या अंगूर की लता पर कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही नहीं। और न ही खारे झोत से कभी मीठा जल निकल पाता है।

### सच्चा विवेक

13 भला तुममें, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है, उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिये कि उसके कर्म उस सज्जनता के साथ किये गये हैं जो ज्ञान से जुड़ी है। 14 किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर ईर्ष्या और स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल मत पीटो। ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए

असत्य बोल रहे हो। 15 ऐसा "ज्ञान" तो ऊपर अर्थात् स्वर्ग से, प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है। आत्मिक नहीं है। तथा शैतान का है। 16 क्योंकि जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थ पूर्ण महत्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बातें रहती हैं। 17 किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान सबसे पहले तो पवित्र होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील, सहज-प्रसन्न, करुणापूर्ण होता है। और उससे उत्तम कर्मों की फसल उपजती है। वह पक्षपात-रहित और सच्चा भी होता है। 18 शांति के लिए काम करने वाले लोगों को ही धार्मिक जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण वातावरण में बोया गया है।

### परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

4 तुम्हारे बीच लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? क्या उनका कारण तुम्हारे अपने ही भीतर नहीं है? तुम्हारी वे भोग-विलासपूर्ण इच्छाएँ ही जो तुम्हारे भीतर निरन्तर द्रव्य करती रहती हैं, क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं होते? 2 तुम लोग चाहते तो हो किन्तु तुम्हें मिल नहीं पाता। तुम में ईर्ष्या है और तुम दूसरों की हत्या करते हो, फिर भी जो चाहते हो, प्राप्त नहीं कर पाते। और इसीलिये लड़ते झगड़ते हो। अपनी इच्छित वस्तुओं को तुम प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि तुम उन्हें परमेश्वर से नहीं माँगते। 3 और जब माँगते भी हो तो तुम्हारा उद्देश्य अच्छा नहीं होता। क्योंकि तुम उन्हें अपने भोग-विलास में ही उड़ाने को माँगते हो। 4 अरे, विश्वास विहीन लोगो! क्या तुम नहीं जानते कि संसार से प्रेम करना परमेश्वर से घृणा करने जैसा ही है? जो कोई इस दुनिया से दोस्ती रखना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता है। 5 अथवा क्या तुम ऐसा सोचते हो कि शास्त्र ऐसा व्यर्थ में ही कहता है कि, "परमेश्वर ने हमारे भीतर जो आत्मा दी है, वह ईर्ष्या पूर्ण इच्छाओं से भरी रहती है।" 6 किन्तु परमेश्वर ने हम पर अत्यधिक अनुग्रह दर्शाया है, इसीलिए शास्त्र में कहा गया है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोधी है, जबकि दीन जनों पर अपनी अनुग्रह दर्शाता है।" \* 7 इसीलिए अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर दो। शैतान का विरोध करो, वह तुम्हारे सामने से भाग खड़ा होगा। 8 परमेश्वर के पास आओ, वह भी तुम्हारे पास आयेगा। अरे पापियो! अपने हाथ शुद्ध करो और अरे सन्देह करने वालो, अपने हृदयों को पवित्र करो। 9 शोक करो, विलाप करो और दु:खी होओ। हो सकता है तुम्हारे ये अट्टहास शोक में बदल जायें और तुम्हारी यह प्रसन्नता विषाद में बदल जाये। 10 प्रभु के सामने दीन बनो। वह तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

"परमेश्वर ... है" नीति. 3:34

### न्यायकर्ता तुम नहीं हो

11हे भाइयों, एक दूसरे के विरोध में बोलना बंद करो। जो अपने ही भाई के विरोध में बोलता है, अथवा उसे दोषी ठहराता है, वह व्यवस्था के ही विरोध में बोलता है और व्यवस्था को दोषी ठहराता है। और यदि तुम व्यवस्था पर दोष लगाते हो तो व्यवस्था के विधान का पालन करने वाले नहीं रहते वरना उसके न्यायकर्ता बन जाते हो। 12व्यवस्था के विधान को देने वाला और उसका न्याय करने वाला तो बस एक ही है। और वही रक्षा कर सकता है और वही नष्ट करता है। तो फिर अपने साथी का न्याय करने वाले तुम कौन होते हो?

### अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो

13ऐसा कहने वालो सुनो, “आज या कल हम इस या उस नगर में जाकर साल-एक भर वहाँ व्यापार में धन लगा बहुत सा पैसा बना लेंगे।” 14किन्तु तुम तो इतना भी नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या बनेगा! देखो, तुम तो उस धुंध के समान हो जो थोड़ी सी देर को उठती है और फिर खो जाती है। 15सो इसके स्थान पर तुम्हें तो सदा यही कहना चाहिये, “यदि प्रभु ने चाहा तो हम जीयेंगे और यह या वह करेंगे।” 16किन्तु स्थिति तो यह है कि तुम तो अपने आडम्बरों के लिये स्वयं पर गर्व करते हो। ऐसे सभी गर्व बुरे हैं। 17तो फिर यह जानते हुए भी कि यह उचित है, उसे नहीं करना पाप है।

### स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे

5 धनवानो सुनो, जो विपत्तियों तुम पर आने वाली हैं, उनके लिये रोओ और ऊँचे स्वर में विलाप करो। 2तुम्हारा धन सड़ चुका है। तुम्हारी पोशाकें कीड़ों द्वारा खा ली गयी हैं। 3तुम्हारा सोना चाँदी जंग लगने से बिगड़ गया है। उन पर लगी जंग तुम्हारे विरोध में गवाही देगी और तुम्हारे मांस को अग्नि की तरह चट कर जायेगी। तुमने अपना खजाना उस आयु में एक ओर उठा कर रख दिया है जिसका अंत आने को है। 4देखो, तुम्हारे खेतों में जिन मजदूरों ने काम किया, तुमने उनका मेहनताना रोक रखा है। वही मेहनताना चीख पुकार कर रहा है और खेतों में काम करने वालों की वे चीख पुकारें सर्वशक्तिमान प्रभु के कानों तक जा पहुँची हैं। 5धरती पर तुमने विलासपूर्ण जीवन जीया है और अपने आपको भोग-विलासों में डुबोये रखा है। इस प्रकार तुमने अपने आपको वध किये जाने के दिन के लिये पाल-पोसकर हृष्ट-पुष्ट कर लिया है। 6तुमने भोले लोगों को दोषी ठहराकर उनके किसी प्रतिरोध के अभाव में ही उनकी हत्याएँ कर डालीं।

### धैर्य रखो

7इसलिए भाइयों, प्रभु के फिर से आने तक धीरज धरो। उस किसान का ध्यान धरो जो अपनी धरती की

मूल्यवान उपज के लिये बाट जोहता रहता है। इसके लिये वह आरम्भिक वर्षा से लेकर बाद की वर्षा तक निरन्तर धैर्य के साथ बाट जोहता रहता है। 8तुम्हें भी धैर्य के साथ बाट जोहनी होगी। अपने हृदयों को दृढ़ बनाये रखो क्योंकि प्रभु का दुबारा आना निकट ही है। 9हे भाइयों, आपस में एक दूसरे की शिकायतें मत करो ताकि तुम्हें अपराधी न ठहराया जाये। देखो, न्यायकर्ता तो भीतर आने के लिये द्वार पर ही खड़ा है। 10हे भाइयों, उन भविष्यत्वाओं को याद रखो जिन्होंने प्रभु के लिये बोला। वे हमारे लिए यातनाएँ झेलने और धैर्य पूर्ण सहनशीलता के उदाहरण हैं। 11ध्यान रखना, हम उन की सहनशीलता के कारण उनको धन्य मानते हैं। तुमने अब्युब के धीरज के बारे में सुना ही है और प्रभु ने उसे उसका जो परिणाम प्रदान किया, उसे भी तुम जानते ही हो कि प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण है।

### सोच विचार कर बोलो

12हे मेरे भाइयों, सबसे बड़ी बात यह है कि स्वर्ग की अथवा धरती की या किसी भी प्रकार की कसमें खाना छोड़ो। तुम्हारी “हाँ”, “हाँ” होनी चाहिये, और “ना” ना होनी चाहिये। ताकि तुम पर परमेश्वर का दण्ड न पड़े।

### प्रार्थना की शक्ति

13यदि तुममें से कोई विपत्ति में पड़ा है तो उसे प्रार्थना करनी चाहिये और यदि कोई प्रसन्न है तो उसे स्तुति-गीत गाने चाहिये। 14यदि तुम्हारे बीच कोई रोगी है तो उसे कलीसिया के अगुवाओं को बुलाना चाहिये कि वे उसके लिये प्रार्थना करें और उस पर प्रभु के नाम में तेल मलें 15विश्वास के साथ की गयी प्रार्थना से रोगी निरोग होता है। और प्रभु उसे उठाकर खड़ा कर देता है। यदि उसने पाप किये हैं तो प्रभु उसे क्षमा कर देगा। 16इसलिये अपने पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है। 17नबी एलियाह एक मनुष्य ही था ठीक हमारे जैसा। उसने तीव्रता के साथ प्रार्थना की कि वर्षा न हो और साढ़े तीन साल तक धरती पर वर्षा नहीं हुई। 18उसने फिर प्रार्थना की और आकाश में वर्षा उमड़ पड़ी तथा धरती ने अपनी फसलें उपजायीं।

### एक आत्मा की रक्षा

19हे मेरे भाइयों, तुम में से कोई यदि सत्य से भटक जाये और उसे कोई फिर लौटा लाये तो उसे यह पता होना चाहिये कि 20जो किसी पापी को पाप के मार्ग से लौटा लाता है वह उस पापी की आत्मा को अनन्त मृत्यु से बचाता है और उसके अनेक पापों के क्षमा किये जाने का कारण बनता है।

*Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at [www.bibleleague.org/donate](http://www.bibleleague.org/donate) or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.*

## **Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)**

© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.



Bible League International

1 Bible League Plaza

Crete, IL 60417, USA

Phone: 866-825-4636

Email: [permissions@bibleleague.org](mailto:permissions@bibleleague.org)

Web: [www.bibleleague.org](http://www.bibleleague.org)

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0

B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2

B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6

B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8

**Free downloads: [www.bibleleague.org/downloads](http://www.bibleleague.org/downloads)**

